विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 25 : अंक 6 : नई दिल्ली : 3-9 मई 2019

परम पावन आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के दसवें महाप्रयाण दिवस के उपलक्ष में
परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा रचित गीत

गुरुवर की स्तुति हम करें।

भैक्षव शासन दशमगणी प्रभु प्रज्ञावान।
आगम अनुसंधान में किया समय प्रदान।।१।।

योग जगत को नव अवदान दिया प्रेक्षाध्यान।
जैन-अजैनों के लिए सुख शान्ति निधान।।२।।

तेरापंथ-प्रोन्नति खातिर श्रम विनियोजन।
तुलसी विभुवर का किया शुभ सहयोजन।।३।।

शिक्षा में जीवन विज्ञान भावशुद्धि विधान।
विद्यार्थीगण के लिए मंगल मार्ग महान।।४।।

प्रवचन पाटव प्रभुवर का बहुश्रुत गुरुदेव।
कण्ठ मधुरता स्पष्टता शोभन स्वयमेव।।५।।

वर सरदारशहर सुनगर, कृष्ण वैशाख मास।
गोठीजी का पुण्य गेह, विभु का सुरवास।।६।।

'महाश्रमण' गुरु उपकारी, स्वामी दीनदयाल।
दसवां आज चरम दिवस, स्तवरत गणपाल।।७।।

लय :- निर्लेप पदम जिसा प्रभु.....

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण तमिलनाडु में

शक्ति का गोपन और दुरुपयोग न करें

२१ अप्रेल। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः तानीचियम से वाडीपट्टी की ओर प्रस्थान किया। विहार पथ के आसपास दृष्टिगोचर हो रही पहाड़ों की शृंखला रमणीयता लिए हुए थी। केलों, ईख आदि की खेती मार्ग को प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण बनाए हुए थी। पूज्यप्रवर लगभग ६.० कि.मी. का विहार कर वाडीपट्टी में स्थित एम.बी.ए. कॉलेज में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ। कॉलेज के एच.ओ.डी. श्री राजेश ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। कुछ समय पश्चात् कॉलेज के ऑनर श्री जे.एस. देवदास फल-फूल आदि लिए हुए पूज्यप्रवर के स्वागत में उपस्थित हुए। उन्होंने अपने कॉलेज में प्रवास करने हेतु श्रीचरणों में कृतज्ञभाव अर्पित करते हुए फल-फूल आदि को ग्रहण करने की प्रार्थना की। आचार्यप्रवर ने उन्हें जैन साधुचर्या की अवगति प्रदान कर मात्र उनकी भावना को स्वीकार किया।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अन्तर्गत अपने पावन प्रवचन में कहा--'जीवन में शक्ति का बहुत महत्त्व होता है। कमजोर व्यक्ति का बाहर भी असम्मान हो सकता है और वह स्वयं में भी हीनता की अनुभूति कर सकता है।

आदमी को अपनी शक्ति का भान हो जाए, उसकी शक्ति जाग जाए और वह शक्ति का अच्छा उपयोग करने लग जाए तो वह उपयोगी बन सकता है। उसे अपनी शक्ति का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। दुर्जनों की शक्ति दूसरों को पीड़ा पहुंचाने में तथा सज्जनों की शक्ति दूसरों का कल्याण करने में प्रयुक्त होती है। आदमी को अपनी शक्ति का गोपन और दुरुपयोग नहीं करना चाहिए।'

पूज्यप्रवर ने एम.बी.ए. कॉलेज से संबंधित लोगों को जैन साधुचर्या व अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति देते हुए पावन प्रेरणा प्रदान की।

पूज्यप्रवर के प्रवचन के पश्चात् एम.बी.ए. कॉलेज के एच.ओ.डी. श्री राजेश ने कहा--'राष्ट्र के महान संत आचार्यश्री महाश्रमणजी का मैं हमारे इस संस्थान में सादर स्वागत करता हूं। इस जनकल्याणकारी अहिंसा यात्रा का पड़ाव हमारे यहां हुआ, यह हमारे लिए अत्यंत सौभाग्य का विषय है। आचार्यश्री मानव को मानवता का पाठ पढ़ाने के लिए हजारों किलोमीटर की पैदल यात्रा कर रहे हैं। आपकी अहिंसा यात्रा के तीनों संदेशों को हम अपने जीवन में सदा बनाए रखेंगे।'

सायंकाल करीब ५.१५ बजे परमपूज्य आचार्यप्रवर वाडीपट्टी से पान्डियाराजपुरम् की ओर प्रस्थित हुए। एक ही इमारत में प्रवास होने के कारण संतों और साध्वियों में से किसी एक का विहार करना अपेक्षित था। मध्याह्न में जब साध्वीप्रमुखाजी पूज्यसन्निधि में उपस्थित थीं, तब इस विषय में चर्चा चली तो आचार्यश्री ने अनिश्चितकाल के लिए यह निर्णीत कर दिया कि जब कभी एक इमारत में प्रवास होने के कारण मुनिवृंद और साध्वीवृंद में से किसी एक वर्ग का विहार करना आवश्यक हो तो सामान्यतया आचार्यप्रवर और संतों का विहार हो। इसके लिए साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों को श्रम न दिया जाए। आचार्यप्रवर के इस निर्णय से साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियां श्रद्धाप्रणत थीं। साध्वियों ने पूज्यप्रवर के प्रस्थान के समय अपने कृतज्ञ भावों को श्रीचरणों में अर्पित करने के लिए गीत की सद्यः रचित कुछ पंक्तियों का संगान किया, जो इस प्रकार हैं--

करुणा रा सागर म्हां पर करुणा कराई,
सायं बिहार री प्रभु छुट्टी दिराई,
धूप ताप री कठिनाई खुद पर लिराई,
करां कामना मारग में ठंडी लहरां आवै सा।।
सुखै सुखै पधराओ गुरुवर सगला सतियां गावै सा।।

इन पंक्तियों को सुनकर आचार्यप्रवर के मुखारविन्द पर मुस्कान दिखाई दे रही थी। सम्मुखीन सूर्य आतप बरसाने को आतुर था, किन्तु बादलों ने मानों छतरी बनाकर उसके ताप को हल्का बना लिया। पर्वत शृंखलाओं के परिपार्श्ववर्ती इस क्षेत्र में नारियल, केले, आम आदि के बगीचे और भी रमणीय रूप में दृष्टिगोचर हो रहे थे। करीब ३.६ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर पान्डियाराजपुरम् में स्थित गवर्नमेन्ट मदुरा शुगर हायर सेकैंड्री स्कूल में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

पूज्यवर ने दिया पंचपदवंदना का प्रायोगिक प्रशिक्षण

२२ अप्रेल। परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः पान्डियाराजपुरम से अम्मयानायक्कनुर की ओर प्रस्थित हुए। पूज्यप्रवर ने मार्ग में मदुरै जिले से डिंडीगुल जिले में प्रवेश किया। इन दिनों दिखाई दे रही मार्ग की परिपार्श्ववर्ती पर्वत शृंखलाओं के विषय में बताया गया कि ये कोडाई केनाल की पर्वत मालाएं हैं। यहां से करीब ८० किलोमीटर दूर स्थित कोडई केनाल दक्षिण भारत का प्रमुख पर्वतीय स्थल है। पहाड़ों से घिरे इस स्थान पर प्रायः पूरे वर्ष मौसम सुहाना बना रहता है। बारह वर्ष में एक बार खिलने वाला कुरिंजी फूल यहां देखने को प्राप्त होता है। खूबसूरत झरने और झील इसके आकर्षण के केन्द्र बिंदु हैं। पूज्यप्रवर करीब ७.२ कि.मी. का विहार कर अम्मयानायक्कनुर में स्थित गवर्नमेन्ट हॉयर सैकैंड्री स्कूल में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'हमारे जीवन में शक्ति का भी महत्त्व है और भक्ति का भी महत्त्व है। जीवन में दोनों का उपयोग होना चाहिए। आदमी को पंच परमेष्ठी, सत्य और अपने धर्मसंघ के प्रति भक्ति का भाव रखना चाहिए। भक्ति दिखावटी न हो, वह भीतरी होनी चाहिए। गुणगान करना भी अच्छा है, किन्तु मौके पर कुर्बानी देने का भाव भी भीतर में रहना चाहिए। अवसर पर अपने स्वार्थ का, अपने पद का परित्याग कर सके, ऐसी भक्ति का भाव भीतर में रहना चाहिए।'

पूज्यप्रवर ने प्रवचन के पश्चात् जनता को वंदनपाठ और पंचपद वंदना का प्रायोगिक प्रशिक्षण प्रदान कर भक्ति के संदर्भ में और अधिक उत्प्रेरित किया।

आगामी कल के विहार की दूरी को देखते हुए आज सायं विहार करना अपेक्षित था। रात्रिकालीन प्रवास के लिए दो स्थानों की जानकारी प्राप्त हुई, उनमें से एक में पूज्यप्रवर और संतों का प्रवास होना था तथा दूसरे में साध्वियों का प्रवास। एक की दूरी करीब ६.७ कि.मी. थी तो दूसरे की दूरी लगभग ९ कि.मी. पूज्यप्रवर ने अधिक दूरी वाले गंतव्य स्थल पर पधारना स्वीकार किया। इसके लिए पूज्यप्रवर करीब ३.५० बजे कड़ी धूप में अम्मयनायक्कनुर से जे. ओतुपट्टी की ओर प्रस्थित हुए। सूर्य के आसपास बादल भी दिखाई दे रहे थे, किन्तु मानों सूर्य की तीव्र तेजस्विता के सामने जाने की हिम्मत बादलों में भी नहीं हो रही थी। आचार्यप्रवर प्रखर आतप बरसाने वाले और शरीर को पसीने से नहलाने वाले सूर्य की परवाह किए बिना गंतव्य स्थल की ओर गति कर रहे थे। काफी समय बाद सूर्य पहले बादलों तथा फिर पहाड़ों की ओट में छुप गया। बादलों और पहाड़ों के बीच से निकलने वाली अस्ताचलगामी सूर्य की अरुण आभा पश्चिम दिशा के दृश्य को नयनाभिराम बनाए हुए थी। मार्ग में कुछ समय के लिए हल्की बूंदाबांदी भी हुई। लगभग ९ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर जे.ओतुपट्टी में स्थित ए.आर.एम.बी.ए. कॉलेज में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

रात्रि में कुछ तेज वर्षा भी हुई, जिसके कारण वेग के साथ बहने वाली हवा ने हल्की सर्दी का-सा वातावरण बना दिया। इस कारण आचार्यप्रवर का रात्रिशयन कक्ष में ही हुआ।

अपने आप से लड़ो

२३ अप्रेल। आज प्रातः आचार्यप्रवर जे. ओतुपट्टी से डिंडीगुल की ओर प्रस्थित हुए। गत रात्रि में हुई बारिश के कारण मौसम में शीतलता व्याप्त थी। ग्रामीण लोग मार्ग में स्थान-स्थान पर सड़क के परिपार्श्व में अंगूर का विक्रय कर रहे थे। निकटस्थ खेतों में खम्भों के सहारे टिके तारों पर अंगूर की लताएं फैली हुई थीं, जिन पर अंगूर के गुच्छे लटक रहे थे। विहार के दौरान पेरुमल कोविलपट्टी के ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए तो आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। लगभग ११ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर डिंडीगुल के पार्वतीज् अनुग्रह इंटरनेशनल स्कूल के प्रांगण में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय की प्रिंसिपल सूर्यवती आदि शिक्षकों ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परमपूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'अपने आपको जीतकर आदमी सुख प्राप्त कर सकता है और उसके लिए युद्ध करना आवश्यक है। दुनिया में जब युद्ध होता है, हिंसा का प्रसंग बनता है, तब अशांति, दुःख, दहशत का माहौल बन सकता है। दूसरों से युद्ध किया जाता है। शास्त्रकार ने कहा कि अपने आप से लड़ो। भीतर के युद्ध से भागना नहीं चाहिए, जागृत रहना चाहिए। जब तक विजय नहीं मिल जाए, तब तक लड़ते रहना चाहिए।

युद्ध में यह जानना आवश्यक होता है कि हमारा शत्रु कौन है और हमारे पास हथियार कौनसे हैं। उसके बाद उन्हें चलाने का ज्ञान भी होना आवश्यक है। उसके साथ भीतर में मनोबल हो तो युद्ध अच्छा हो सकता है।

चार कषाय--क्रोध, मान, माया और लोभ हमारी आत्मा के शत्रु हैं। क्रोध को उपशम, अंहकार को मार्दव-मृदुता, माया को आर्जव-ऋजुता तथा लोभ को संतोष के हथियार से परास्त किया जा सकता है, जीता जा सकता है। अनुप्रेक्षा, जप, अभ्यास और संकल्प के द्वारा इन हथियारों को चलाना चाहिए। यदि अच्छे तरीके से हथियार का उपयोग करेंगे तो ये चारों शत्रु कमजोर पड़ सकेंगे।

मोहनीय कर्म हमारा दुश्मन है, शत्रु है। उसको जीतने के लिए अध्यात्म का अभ्यास आवश्यक है। कभी मोहनीय कर्म भी अपना वर्चस्व दिखाता है। कभी मोहनीय कर्म आत्मा को दबाता है तो कभी आत्मा मोहनीय कर्म को दबाने का प्रयास करती है। मोहनीय कर्म के संदर्भ में उदय भाव और क्षयोपशम भाव में संघर्ष चलता है। क्षयोपशम भाव उदय भाव को परास्त कर दे तो आत्मा की जीत होती है और उदय भाव क्षयोमशम भाव को परास्त कर दे तो आत्मा की हार हो जाती है।

गुस्सा हमारा शत्रु है, उसको शांत करने के लिए जप, संकल्प आदि का प्रयोग करने का प्रयास करना चाहिए। आदमी का काम पुरूषार्थ करना है, सफलता मिले, कभी तत्काल न भी मिले।

आदमी को न पैसे का, न ज्ञान का, न सत्ता का, न रूप का, न तपस्या का, न जाति का, न कुल का अहंकार करना चाहिए। जो नियति, प्रकृति, नियम से मिला है, उसको शांति से झेलना चाहिए। किसी बात का घमंड नहीं करना चाहिए तथा छल-कपट को क्षीण करने का और लोभ को जीतने का भी प्रयास करना चाहिए।'

विद्यालय की प्रिंसिपल सूर्यवती ने कहा--'यह हमारा सौभाग्य है कि आप हमारे विद्या संस्थान रूपी मंदिर में पधारे। मैं आपका और आपके अनुयायियों का स्वागत करती हूं। आपके पदार्पण से हमारे विद्यालय में आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार हुआ है।'

आचार्यप्रवर ने अंग्रेजी भाषा में जैन साधुचर्या और अहिंसा यात्रा की जानकारी प्रदान करते हुए उन्हें अपनाने की तथा विद्यार्थियों में ईमानदारी, सौहार्द और नशामुक्ति के संस्कार जगे, ऐसा प्रयास करने की प्रेरणा प्रदान की।

आचार्यप्रवर के पदार्पण से स्कूल प्रांगण में हर्ष और आध्यात्मिक उल्लास का वातावरण छाया हुआ था।

मध्याह्न में स्कूल के शिक्षक वर्ग की संगोष्ठी आयोजित की गई। जिसके अन्तर्गत शिक्षक-शिक्षिकाओं को जीवन विज्ञान के विषय में जानकारी दी गई और प्रयोग करवाए गए। संगोष्ठी के पश्चात् शिक्षक-शिक्षिकाएं आचार्यप्रवर की पावन प्रेरणा से भी लाभान्वित हुए।

सायंकालीन विहार से पूर्व हल्की बरसात हुई। किन्तु विहार के निर्धारित समय से पहले थम भी गई। आचार्यप्रवर ने करीब ४.३० बजे अनुग्रह इंटरनेशनल स्कूल से डिंडीगुल में ही स्थित अंगुवेल हायर सैकेंड्री स्कूल की ओर प्रस्थान किया। आसमान में अब भी बादल मंडरा रहे थे। यदा-कदा हल्की बूंदाबांदी भी हुई। कुछ समय पश्चात् वर्षा ने कुछ तेज रूप धारण कर लिया। दांयी ओर से वेग के साथ बहने वाली हवा वर्षा की बूंदों में तीव्रता और शीतलता प्रदान किए हुई थी। प्रायः विहार के दौरान आतप के कारण पसीने से तरबतर रहने वाले शरीर आज वर्षा के कारण पानी से तरबतर बने हुए थे। मार्ग में डिंडीगुल के ग्रामीण लोग अपने घरों के सामने आचार्यप्रवर का दर्शन कर धन्यता का अनुभव कर रहे थे और पूज्यप्रवर से आशीर्वाद प्राप्त कर रहे थे। लगभग ६.८ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर अंगुवेल हायर सैकेंड्री स्कूल में पधारे। स्कूल के शिक्षकों ने आचार्यप्रवर का स्कूल प्रांगण में अभिवादन किया। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

आत्मानुशासन करें

२४ अप्रेल। आज विहार से पूर्व अंगुवेल हायर सैकेंड्री स्कूल के चीफ एज्युकेशन ऑफिसर श्री शान्ताकुमारम् आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ आए ओर आचार्यप्रवर से आशीर्वाद प्राप्त किया। कार्यकर्ताओं ने बताया कि अहिंसा यात्रा के प्रवास स्थलों की स्वीकृति में आपका बहुत सहयोग प्राप्त हुआ। विहार के दौरान ए.एम. एस.के. पार्टी के कॉमर्शियल सेक्रेट्री श्री मुरुगानदम् सी.ए. तथा उनके मित्र श्री एस.एस. रवीन्द्रन् ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।

डिंडीगुल से आचार्यप्रवर कलनमपट्टी की ओर प्रस्थित हुए। विहार के दौरान कामाचीपुरम् के ग्रामीण लोगों को पूज्यप्रवर के दर्शन और आशीर्वाद प्राप्त करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। करीब ११ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर आचार्यप्रवर कलनमपट्टी में स्थित सेंट पेट्रिक एकेडमी मेट्रिकुलेशन हायर सैकेंड्री स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने मंगल प्रवचन में कहा--' शास्त्रकार ने कहा कि जो मनुष्य दुर्जेय संग्राम में दस लाख योद्धाओं को जीतता है, उसकी अपेक्षा वह एक अपने आपको जीतता है, यह उसकी परम विजय है। क्योंकि हमारी सबसे बड़ी शत्रु हमारी आत्मा होती है। कंठ को काटने वाला शत्रु उतना नुकसान नहीं कर सकता, जितना नुकसान हमारी दुरात्मा, दुष्प्रवृत्ति में संलग्न आत्मा कर लेती है। जो इस आत्मा को जीत लेता है, मानों उसने दुनिया को जीत लिया, वह परम विजेता बन गया।

आत्मा को जीत लेने का मतलब है कषायों को जीत लेना, पांचों इन्द्रियों को भी जीत लेना, आत्मानुशासन कर लेना। आदमी दूसरों पर अनुशासन करना चाहता है, पर स्वयं पर अनुशासन करना कठिन होता है। हम स्वयं पर भी अनुशासन करने का अभ्यास रखें। धर्म की, अध्यात्म की, संयम की, तप की साधना से ही अपने आप पर अनुशासन करना संभव होता है।

थोड़ी कठिनाई आने पर भी व्यक्ति को धर्म नहीं छोड़ना चाहिए। थोड़े से कष्टों से घबराकर निराश नहीं होना चाहिए। धन भले छूटे, किन्तु धर्म को नहीं छोड़ना चाहिए। धर्म को छोड़ने का मतलब है संसार की तरफ अभिमुख होना। कठिनाई आए तो भी देव, गुरु और धर्म के प्रति श्रद्धा को नहीं छोड़ें। आचरण में भले धर्म कम-ज्यादा हो जाए, किन्तु धर्म के प्रति श्रद्धा बनी रहनी चाहिए। हमारी आत्मा को जीतने के लिए धर्म की श्रद्धा मजबूत हो तो आत्मा को जीतने की दिशा में कदम बढ़ाया जा सकता है।

श्रीमज्जयाचार्य ने आराधना ग्रंथ में कहा कि सम्यक्त्व के बिना हमने अनेक बार चारित्र की क्रिया पाल ली होगी, फिर भी हमें मोक्ष नहीं मिला। अभी हमें सम्यक्त्व और चारित्र दोनों प्राप्त हैं। इस स्थिति में हम सहन करें, तप करें, साधना करें तो उसका हमें अच्छा लाभ मिल सकेगा।

साधु महाव्रतों को स्वीकार करते हैं। गृहस्थ उतना न भी कर सके तो बारह व्रत आदि की साधना करे तो वह आत्मानुशासन की साधना में खूब विकास कर सकता है।'

प्रिंसिपल ब्रदर जोन पाल ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी अभिव्यक्ति दी।

मध्याह्न में सेंट पेट्रिक स्कूल के शिक्षकों की एक संगोष्ठी आयोजित हुई, जिसमें संभागी शिक्षकवर्ग को जीवन विज्ञान आदि का प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया गया। तत्पश्चात् शिक्षक-शिक्षिकाएं आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में उपस्थित हुए। आचार्यप्रवर ने उन्हें पावन प्रेरणा प्रदान की।

अपनी आत्मा को मित्र बनाएं

२५ अप्रेल। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः कलनमपट्टी से वेदसंदुर की ओर प्रस्थान किया। मार्ग के परिपार्श्वस्थ आनन्द महल के समीप उसके ऑनर श्री मुत्तुवेल ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर श्रीमुख से मंगलपाठ का श्रवण किया। साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों का गत रात्रि का प्रवास यहीं हुआ था। विहार मार्ग पर गति कर रहीं बारीक चींटियां पूज्यप्रवर की गतिमंदता का कारण बनी हुई थीं। तमलपेट्टी के ग्रामीण लोग मार्ग में पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए।

पूज्यप्रवर ८.४ कि.मी. का विहार सम्पन्न कर वेदसंदुर में स्थित डॉलर इंडस्ट्रिज लिमिटेड के परिसर में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। श्री विनय गुप्ता, बजरंग गुप्ता आदि परिजनों तथा डॉलर इंडस्ट्रिज के स्टाफ आदि ने आचार्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यप्रवर को अपने प्रांगण में पाकर गुप्ता परिवार हर्षविभोर बना हुआ था। भक्ति भावों से ओतप्रोत गुप्ता परिवार के सदस्य प्रायः दिनभर पूज्यप्रवर की उपासना, प्रवचन श्रवण, सुपात्रदान, अहिंसा यात्रा की व्यवस्थाओं आदि में लीन रहे। पूज्यप्रवर ने गुप्ता परिवार को निकट उपासना का अवसर प्रदान कर परिवार के सदस्यों की जिज्ञासाओं को भी समाहित किया। सायंकालीन विहार से पूर्व डॉलर ग्रुप से जुड़े हुए श्रमिक आदि बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ उपस्थित हुए। आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। पूज्यप्रवर के निर्देश पर उन्हें तमिल भाषा में अहिंसा यात्रा की अवगति और प्रेरणा भी दी गई।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारी दुनिया में दुःख भी है और सुख भी है। एक ही आदमी कभी दुःखी बना हुआ दिखाई देता है कभी सुखी बना हुआ दिखाई दे सकता है। प्रश्न होता है सुख-दुःख का कर्ता कौन है? शास्त्रकार ने कहा-सुख और दुःख दोनों को उत्पन्न करने वाली हमारी आत्मा ही है। आत्मा ही हमारी शत्रु है और आत्मा ही हमारी मित्र बन जाती है। हमारे पूर्वकृत पुण्य हमारे भौतिक सुखों के हेतु बन जाते हैं और पाप दुःख के हेतु भी बन जाते हैं। इसलिए यदि सुखी बनना है तो हम अपनी आत्मा को मित्र बनाएं। जो आत्मा हमारी शत्रु बन जाती है, वह हमें दुःखी बनाती है। यह आत्मकर्तृत्ववाद का सिद्धान्त है।

जैन दर्शन ईश्वर कर्तृत्व को नहीं मानता। किन्तु आत्मा को ईश्वर मान लिया जाए तो जैन दर्शन ईश्वर कर्तृत्ववाद को मान सकता है। आत्मा परम ऐश्वर्य सम्पन्न होती है। आत्मा के भीतर परम शक्ति है। आत्मा ही ईश्वर है और वही सुख-दुःख की कर्ता है। इस रूप में ईश्वर कर्तृत्ववाद को स्वीकार किया जा सकता है।

आत्मा ही हमारी मित्र है, आत्मा ही शत्रु है। बाहर के मित्र-शत्रु गौण हैं। आत्मा को मित्र बनाएं। आत्मा को मित्र बनाने का मतलब है-सन्मार्ग पर चलें, अच्छे रास्ते पर चलें, अहिंसा, नशामुक्ति आदि-आदि चीजों को जीवन में अपनाएं। यदि हम सन्मार्ग पर सुप्रस्थान करेंगे तो आत्मा मित्र बन जाएगी। अगर हमारी

आत्मा अठारह पापों में रची-पची रहती है तो वह आत्मा हमारी दुश्मन है। अपनी आत्मा को शत्रु न बनने दें, हम उसे अपना मित्र बनाएं।'

डॉलर कम्पनी के ऑनर श्री विनय गुप्ता ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा--'आज हमारे गुप्ता परिवार और डॉलर कंपनी के सभी कर्मचारियों के लिए सौभाग्य का दिन है कि आचार्यश्री धवल सेना के साथ हमारे प्रागंण में पधारे हैं। आप नैतिकता, सद्‌भावना और नशामुक्ति के द्वारा जनमानस में जागृति पैदा कर रहे हैं। मैं यहां प्रवास करने की कृपा करने के लिए आचार्यश्री का आभारी हूं।'

इस अवसर पर श्री बजरंग गुप्ता तथा श्री हेमन्त पारख ने भी आचार्यप्रवर के स्वागत में अपने आस्थासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए।

सायंकाल करीब ४.३० बजे आचार्यप्रवर वेदसंदुर से काशीपाल्यम् की ओर प्रस्थित हुए। गुप्ता परिवार के सदस्यों ने पूज्यचरणों में अपनी कृतज्ञ भावांजलि अर्पित की। विहार के प्रारंभ में बांयीं ओर स्थित सूर्य तीव्र आतप बरसाते हुए शरीर को पसीने से नहला रहा था, किन्तु कुछ समय पश्चात् वह बादलों की ओट में छुप गया। सूर्य की अनुपस्थिति में हवा पर्वतों के परिपार्श्ववर्ती क्षेत्र को रमणीय रूप प्रदान किए हुए थी। विहार के दौरान कई कारखानों के कर्मचारियों को आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। करीब ६.५ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर पूज्यप्रवर काशीपाल्यम् में स्थित गवर्नमेंट हायर सैकेंड्री स्कूल में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

भोग से योग की ओर गति करें

२६ अप्रेल। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने प्रातः काशीपाल्यम् से आंडीपट्टीकोटे की ओर प्रस्थान किया। आसमान में विहरण कर रहे बादलों के कारण सूर्य अदृश्य बना हुआ था। मंद-मंद हवा के कारण हरे-भरे पर्वतों की सुषमा और भी निखरी हुई-सी प्रतीत हो रही थी। काशीपाल्यम् के ग्रामीणों ने मार्ग में पूज्यचरणों में अपनी प्रणति अर्पित कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।

आचार्यप्रवर मार्ग में एक स्थान पर पेयपान के लिए आसीन हुए। उद्देश्य पूर्ति के उपरांत भी पूज्यप्रवर वहां विराजमान रहे। उपस्थित संत इसकी वजह खोज ही रहे थे कि आचार्यप्रवर ने अनशनरत शासनगौरव मुनिश्री ताराचंदजी के विषय में गीत निर्माण प्रारंभ कर दिया। आचार्यप्रवर ने कुछ पंक्तियां रचीं, जो इस प्रकार हैं--

भैक्षवगण नभ तारा, तारा मुनि उजियारा हो।
धारा शुभ संथारा, तारा मुनि उजियारा हो।
शासन गौरव निर्मल वैभव, तुलसी गुरुवर शिष्य।।

छोटी वय में जिनशासन में, पाया मुनि का स्थान।
चोरड़िया कुल धन्य बनाया, पाया पुन्य निधान।।

करीब ११.४ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर आंडीपट्टीकोटे में पधारे। ग्रामवासियों ने आचार्यप्रवर को वंदन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। आस्था भावों से अभिभूत कई ग्रामीण पूज्यप्रवर को साष्टांग वंदन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त कर रहे थे। गवर्नमेंट हायर सैकेंड्री स्कूल में पूज्यप्रवर का आज का प्रवास रहा। विद्यालय के एच.ओ.डी. श्री शेखर आदि विद्यालय से संबद्ध व्यक्तियों व अन्य लोगों ने पूज्यप्रवर का भावपूर्ण स्वागत किया।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परमपूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'जो व्यक्ति आसक्ति पैदा करने वाले भोगों में लिप्त रहता है, वह बाल है, अज्ञानी है और वह उसी प्रकार कर्मों से चिपक

जाता है, जैसे श्लेष्म से मक्खी चिपक जाती है। ज्ञानी व्यक्ति पदार्थों का उपयोग करता हुआ भी अलिप्त रहता है।

दो शब्द हैं- भोग और योग। व्यक्ति को भोग से योग की ओर गति करनी चाहिए। इन्द्रियों के पांच विषय हैं--शब्द, रूप, गंध, रस और स्पर्श। पदार्थ का उपयोग करना एक बात है और उसका आसक्ति के साथ उपभोग करना अलग बात होती है। राग-द्वेष या आसक्ति के साथ पदार्थों का भोग होता है, वह कर्मबन्ध कराने वाला होता है तथा आत्मा के लिए अकल्याणकारी और व्यावहारिक रूप में भी अकल्याणकारी हो सकता है।

आदमी बूढ़ा हो जाता है, तब भी तृष्णा बूढ़ी नहीं होती है। कोई साधु तो न भी बन सके, किन्तु उसे गार्हस्थ्य में रहते हुए भी भोग से योग की ओर गति करने का प्रयास करना चाहिए। अवस्था वृद्धि के साथ योग साधना की भी वृद्धि होनी चाहिए। काम भोग थोड़े समय तक सुख दे सकते हैं, किन्तु वे ज्यादा समय तक दुःख देने वाले बन जाते हैं। वे संसार की मुक्ति से विपरीत हैं। भोगी व्यक्ति संसार में भ्रमण करता है। अभोगी संसार से विप्रमुक्त हो जाता है।

गवर्नमेंट हायर सैकेंड्री स्कूल के प्रिंसिपल श्री शंकर ने पूज्यप्रवर का स्वागत करते हुए अहिंसा यात्रा के मिशन को फैलाने का संकल्प व्यक्त किया।

अनासक्त बनें

२७ अप्रेल। परमपूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः आंडीपट्टीकोटे से अरवा कुरिचि की ओर प्रस्थान किया। आंडीपट्टीकोटेवासियों ने आचार्यप्रवर को वंदन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। अपने उदयकाल के कुछ समय पश्चात् ही सूर्य तीव्रता के साथ आतप बरसाता हुआ शरीर को पसीने से नहलाने लगा। वातावरण में व्याप्त उमस मानों इस कार्य में सूर्य की सहयोगी बनी हुई थी। करीब ९ कि.मी की दूरी तय करने के उपरांत आचार्यप्रवर राष्ट्रीय राजमार्ग नं. ७ को छोड़कर भीतरी मार्ग पर पधारे। बताया गया कि ईरोड़ जाने के लिए इस मार्ग का उपयोग करने से राष्ट्रीय राजमार्ग की अपेक्षा करीब १२ कि.मी. कम पड़ेगा। लगभग १२.५ कि. मी. का विहार परिसम्पन्न कर पूज्यप्रवर अरवा कुरिचि में स्थित गवर्नमेंट हायर सैकेंड्री स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परमपूज्य आचार्य ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आदमी का जीवन पदार्थ सापेक्ष है। पूर्णतया पदार्थ निरपेक्ष जीवन जीना कठिन होता है। पदार्थों का आसक्ति के साथ उपभोग करना पापबंधन का कारण है। शास्त्रकार ने कहा कि काम भोग शल्य हैं, विष हैं और आशीविष सर्प के तुल्य हैं। काम भोग की इच्छा करने वाले उनका सेवन न करते हुए भी दुर्गति को प्राप्त होते हैं। सब जीवों के, और तो क्या देवताओं के भी जो कुछ कायिक और मानसिक दुःख होता है। वह काम-भोगों की सतत अभिलाषा से उत्पन्न होता है। वीतराग उस दुःख का अंत पा जाता है।

संतोष के आकाश में उड़ान भरें

२८ अप्रेल। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः अरवाकुरिचि से चिन्नाधारापुरम् की ओर प्रस्थान किया। विहार के दौरान अरवाकुरिचि लायन्स कल्ब के सेक्रेट्री श्री वी. मुरुगेरान ने अपने साथियों के साथ पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। अमरावती नदी पर बना पुल विहार के दौरान पूज्यचरणों से पावनता को प्राप्त हुआ। वर्तमान में यह नदी प्रायः सूखी अवस्था में थी। जहां सूर्य अपने तीक्ष्ण तेवर दिखाते हुए आतप बरसा रहा था, वहीं बादल मानों उसे आच्छादित कर महातपस्वी आचार्यप्रवर की सेवा में स्वयं को नियोजित करने की चेष्टा कर रहे थे। विहार में राजापुरम व कुलियमपट्टी के ग्रामीणों ने आचार्यप्रवर के दर्शन किए तो आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीष प्रदान की।

लगभग ११.२ कि.मी. का विहार सम्पन्न कर आचार्यप्रवर चिन्नाधारापुरम में स्थित अरुनमरै अम्मन कॉलेज ऑफ आर्टस एण्ड साइंस में पधारे। आज दिन का प्रवास यहीं हुआ। कॉलेज के ऑनर श्री कालीमुत्तु ने आचार्यप्रवर का भावपूर्ण स्वागत किया।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारे भीतर क्रोध, मान, माया, भय आदि अनेक वृत्तियां विद्यमान रहती हैं। उनमें एक है लोभ, जो अनेक अपराधों का जनक बन सकता है। लोभ के कारण आदमी हिंसा व अन्य अपराध में चला जाता है। लोभ पाप कर्म के बन्ध का कारण बनता है। व्यक्ति को अति लोभ नहीं करना चाहिए। शास्त्रकार ने कहा कि जैसे-जैसे लाभ बढ़ता है, वैसे-वैसे लोभ भी बढ़ने लग जाता है। ज्यों-ज्यों कुछ मिलता है, त्यों-त्यों और पाने की भावना बढ़ जाती है। गृहस्थ को अपने जीवन की आवश्यकता की पूर्ति हो जाने के बाद संतोष रखना चाहिए, अति संग्रह की मनोवृत्ति से दूर रहना चाहिए।

लोभ को संतोष से जीतना चाहिए। असंतोष में रहने वाले लोग मूढ होते हैं। ज्ञानी लोग संतोष को धारण करते हैं। इच्छा का कहीं अंत नहीं होता, वह आकाश के समान अनन्त होती है। आदमी संतोष के आकाश में उड़ान भरने का प्रयास करे। वह संतोष को प्रबल बनाए और इच्छा को कमजोर करने का प्रयास करे। ज्ञान और साधना में आगे बढ़ने की इच्छा तो अच्छी बात है, भौतिक पदार्थों की इच्छा को सीमित करने का प्रयास करना चाहिए। लोभ की वृत्ति नियंत्रणीय है, क्षीण करने योग्य है।'

साधु सत्यानंदजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'भगवान की वाणी पर चलने के लिए ओर उनके सिद्धांतो को समझाने के लिए यह अहिंसा यात्रा हो रही है। जैसे मंदिरों की मूर्ति को रथ यात्रा के द्वारा गांव की परिक्रमा करवाई जाती है, ताकि लोग अध्यात्म से जुड़ सकें, वैसे ही यह यात्रा गांव-गांव में भ्रमण कर लोगों में अध्यात्म का संदेश फैलाने का कार्य कर रही है। आचार्यश्री के दर्शन कर लोग अध्यात्म को जान रहे हैं।'

संस्थान के वॉइस चेयरमेन श्री मणियम् सी कालिमुथम् ने पूज्यप्रवर का स्वागत करते हुए कहा कि आपके आगमन से पूरा विद्या संस्थान पवित्र बन गया है।

आर.एन. मैट्रिकुलेशन हॉयर सैकेंड्री स्कूल के श्री रामासुब्रह्मणयम ने कहा--'आचार्यश्री महाश्रमणजी तिरुवल्लूवर के उपदेश के समान ही अहिंसा के दर्शन को फैला रहे हैं। तमिल के विख्यात कवि बारदयार ने कहा है कि सद्भावना के बिना उच्च भावना उत्पन्न नहीं हो सकती। उन्हीं विचारों के साथ आप यह यात्रा कर रहे हैं। मैं आपका स्वागत करते हुए अपने आपको सौभाग्यशाली मानता हूं।

सायं करीब पांच बजे पूज्यप्रवर ने चिन्नाधारापुरम में ही स्थित आज के रात्रिकालीन प्रवास स्थल की ओर प्रस्थान किया। आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज के ऑनर श्री कालीमुत्तु ने पूज्यप्रवर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए श्रीचरणों में वंदन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। मार्ग में सिनधरापुरा के ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। बादलों के योग और हवा के सहयोग से विहार के दौरान वातावरण प्रायः अनुकूल रहा। चिन्नाधारापुरम के नागरिकों के पूज्यप्रवर के समक्ष जुड़े हुए हाथ और प्रणत मस्तक उनकी आंतरिक भक्ति को दर्शा रहे थे। करीब ३.८ कि.मी. का मार्ग तय कर आचार्यप्रवर आर.एन. मैट्रिकुलेशन हॉयर सैकेंड्री स्कूल में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

'उवसमेण हणे कोहं' का जप करें

२६ अप्रेल। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने प्रातः चिन्नाधारापुरम से तेन्निलई की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में पुटुपालयम् ओर मडेकाडपुदुर के ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ बड़ी संख्या में मार्ग के परिपार्श्व में खड़े कामाचीपुरम् के ग्रामीण भी आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। इन दिनों यदा-कदा सूर्य बादलों से आच्छादित रहता है, जिसे वातावरण

कुछ अनुकूल बन जाता है।

लगभग ११.० कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर तेन्निलई में स्थित अरुलमुरुगन कॉलेज ऑफ इंजिनियरिंग एंड पोलिटेक्निक कॉलेज में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

संस्थान के वाइस चेयरमेन श्री पी.वी. कन्दस्वामी ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर सादर स्वागत किया। प्रिंसिपल श्री पी. राधाकृष्णन पूज्यप्रवर को वंदन कर बोले- आप यहां आए, हमे ऐसा लग रहा है, साक्षात् भगवान आ गए। आप भगवान स्वरूप हो। हम पर हमेशा आशीर्वाद बनाए रखना।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने कहा--'क्रोध एक दुर्वृत्ति है। क्रोध से व्यक्ति स्वयं परेशान होता है और जिसके प्रति क्रोध किया जाता है, वह भी परेशान हो जाता है। वह मोहनीय कर्म के परिवार का सदस्य है। इस परिवार के सभी सदस्य त्याज्य हैं। हमारे भीतर में जैसे भाव होते हैं, वैसे वे मन, वचन काय के रूप में उभरते हैं। वचन, काय और मन स्थूल है, भाव जगत् सूक्ष्म होता है। जब मोहनीय कर्म से हमारा मन प्रभावित होता है, तब वह अशुभ बन जाता है। मन में क्रोध आदि विकार उत्पन्न हो जाते हैं। उससे हमारी आत्मा का नुकसान हो जाता है। क्रोध से परिवार, व्यापार और समाज में भी खुद का नुकसान हो सकता है।

शान्त रहने वाला तथा संतुलित दिमाग वाला व्यक्ति सुख में रह सकता है। कोई भी स्थिति की अपेक्षित प्रतिक्रिया तो की जा सकती है, किन्तु गुस्सा करना आवश्यक नहीं है। गुस्सा करना व्यक्ति की हार होती है

पारिवारिक, सामाजिक जीवन में एक दूसरे को सहना चाहिए, मौके पर कहना भी चाहिए और शांति से रहना चाहिए। जीवन में गुस्से को स्थान नहीं मिलेगा तो जो गुस्साजन्य अंशाति है, उससे आदमी का बचाव हो सकेगा।

वीतरागता की साधना का एक अंग है कि हम गुस्से पर नियंत्रण करने का प्रयास करें। गुस्से से वैर का अनुबंध कई जन्मों तक चलता रह सकता है। किसी को कष्टापतित करने का रुझान न रहे, हो सके तो किसी का कल्याण करें। गुस्से को जीतने के लिए दीर्घश्वास के साथ 'उवसमेण हणे कोहं' के जप के साथ बार-बार उपशम की अनुप्रेक्षा का प्रयोग करना चाहिए।'

संस्थान के वाइस चेयरमेन श्री पी.वी. कन्दस्वामी ने कहा--'आज का दिन हमारे लिए बहुत बड़ा दिन है। क्योंकि महापुरूष आचार्यश्री महाश्रमणजी हमारे प्रांगण में पधारे हैं। मैं संपूर्ण संस्थान की ओर से स्वागत करता हूं। आपके आध्यात्मिक विचारों से मैं प्रभावित हूं।'

रात्रि में संस्थान परिसर में स्थित छात्रावास में रहने वाले छात्र आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में पहुंचे। आचार्यप्रवर ने उन्हें पावन सम्बोध प्रदान किया। छात्रों की कई जिज्ञासाएं पूज्यप्रवर के द्वारा समाहित हुई।

स्मृति संबल

- पेटलावद निवासी श्रीमती विमलादेवी भण्डारी (धर्मपत्नी श्री सोहनलालजी भण्डारी) का देहावसान हो गया। वे सरल, मृदुभाषी, मिलनसार एवं संघ समर्पित, प्रतिवर्ष ११०० सामायिक करने वाली बारहव्रती श्राविका थी। प्रतिदिन पोरसी, रात्रि भोजन विरमण एवं जमींकंद वर्जन का नियम जिंदगी भर निभाया। पेटलावद सभा भवन के सामने घर होने के कारण चारित्रात्माओं की सेवा-उपासना का पूरा लाभ लेती थीं। आसपास विचरणशील चारित्रात्माओं की रास्ते की सेवा भी जागरूकतापूर्वक करती थी। पूरे परिवार की धुरी बन सभी बच्चों को धार्मिक संस्कारों से संस्कारित किया। पूरा भण्डारी परिवार धर्मसंघ के प्रति पूर्ण समर्पित परिवार है।
- आमेट निवासी बेंगलुरु प्रवासी श्री चिराग जैन (सुपुत्र श्री राजेन्द्रजी जैन) का देहावसान हो गया। वह एक अच्छा कार्यकर्ता था। कम्प्यूटर इंजिनियर बन संघ सेवा की भावना मन में रह गई। हृदयाघात से अल्पायु

में दिवंगत होने पर पूरे परिवार ने दृढ़ मनोबल का परिचय दिया। पूरे परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।

- आसीन्द निवासी मायावरम प्रवासी श्री बलवंत चोरड़िया (सुपुत्र श्री प्रकाशचंद्र चोरड़िया) का अल्पायु में निधन हो गया। वह प्रतिदिन एक सामायिक करता था। मृदुभाषी एवं सुशील व्यक्तित्व का अच्छा कार्यकर्ता था। आसीन्द मर्यादा महोत्सव में सक्रियतापूर्वक सेवा में संलग्न रहा था। पूरे चोरड़िया परिवार ने इस आकस्मिक निधन की स्थिति में दृढ़मनोबल का परिचय दिया। चोरड़िया परिवार संघ समर्पित परिवार है।
- फतेहपुर निवासी कोलकाता प्रवासी श्रीमती नीलू सेठिया (धर्मपत्नी श्री कमल सेठिया) का देहावसान हो गया। वे प्रतिदिन एक सामायिक किया करती थी। प्रतिवर्ष गुरुदर्शन का नियम यावज्जीवन निभाया। वे धार्मिक एवं मिलनसार प्रवृत्ति वाली श्राविका थी। श्रावण-भादवा में प्रतिवर्ष एकान्तर करती थी। चारित्रात्माओं की रास्ते की सेवा में जागरूक रहने वाली न्यू अलीपुर महिला मण्डल की सक्रिय सदस्या थी। पूरे सेठिया परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।
- टोहाना निवासी दिल्ली प्रवासी श्रीमती शकुंतलादेवी जैन (धर्मपत्नी स्व. श्री ओमप्रकाश जैन) का निधन हो गया। वे प्रतिदिन तीन-चार सामायिक करती थी। वे संयम, सादगी एवं त्यागयुक्त जीवनशैली वाली श्राविका थी। हरियाणा एवं दिल्ली में विचरणशील चारित्रात्माओं की रास्ते की सेवा में जागरूक रहती थी। टोहाना मर्यादा महोत्सव के अवसर पर पूरा परिवार सक्रियतापूर्वक जुड़ा हुआ था। स्व. ओमप्रकाशजी के साथ प्रतिवर्ष गुरुदेव के चतुर्मासकाल में सेवा का लाभ उठाया। उनके सुपुत्र स्थानीय तेयुप एवं महासभा के कार्यकारिणी आदि में सक्रिय हैं। पूरा परिवार धर्मसंघ के प्रति समर्पित है।
- सरदारशहर निवासी तेजपुर प्रवासी श्रीमती रेशमीदेवी दुगड़ (धर्मपत्नी स्व. श्री धर्मचंद दुगड़) १६ दिन के संलेखना-संथारे में कालधर्म को प्राप्त गई। वे सरल स्वभावी एवं धार्मिक प्रवृत्ति वाली बारहव्रती श्राविका थी। प्रतिदिन चार सामायिक का नियम यथावत चलता रहा। बाल्यकाल से ही जमींकंद वर्जन का नियम ग्रहण कर लिया। सरदारशहर एवं तेजपुर के आसपास विचरणशील चारित्रात्माओं की सेवा आदि में जागरूक रहती थी। ८, १५ आदि की तपस्या कर आत्म निर्जरण किया। परिवार से संबंधित साध्वी ललितप्रभाजी, साध्वी अमितप्रभाजी, साध्वी श्री सरलप्रभाजी आदि चारित्रात्मा संघ में साधनारत हैं। पूरे दूगड़ परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।
- नोहर निवासी फरीदाबाद प्रवासी श्रीमती झणकारदेवी लूणिया (धर्पपत्नी श्री पूनमचंद लूणिया) का निधन हो गया। वे मिलनसार एवं नेतृत्व क्षमता वाली बारहव्रती श्राविका थी। रात्रिभोजन एवं जमींकंद वर्जन करते हुए प्रतिदिन दो सामायिक करती थी। फरीदाबाद महिला मण्डल में अनेक पदों पर रहकर अपनी सेवाएं दी। प्रतिवर्ष गुरुदर्शन का क्रम रहता था। परिवार से साध्वी जयमालाजी आदि साध्वियां धर्मसंघ में साधनारत हैं। पूरा लूणिया परिवार संघ एवं संघपति के प्रति समर्पित है।

गर्मी की छुट्टियों में बालक-बालिकाओं के लिए संस्कार निर्माण शिविरों का समायोजन

परमपावन आचार्यप्रवर के मंगल आशीर्वाद से जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा और स्थानीय तेरापंथी सभाओं के संयुक्त आयोजकत्व में आगामी गर्मी की छुट्टियों में संस्कार-निर्माण शिविर का समायोजन किया जा रहा है। तेरह से उन्नीस वर्ष तक की आयु के बालक-बालिकाओं के लिए समायोज्य इन महत्त्वपूर्ण शिविरों की दिनांकें, क्षेत्र, संपर्क सूत्र आदि इस प्रकार हैं--

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/2018-20 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2018-2020
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

दिनांक	क्षेत्र	संपर्क सूत्र	संभागी
२४ से २८ मई २०१९	केसिंगा	९७७६५८३७४७	बालक
३० मई से ३ जून २०१९	मुम्बई-ठाणे	९३२२४४१८४८	बालिका
१ से ५ जून २०१९	सूरत	९४२६१५०३७५	बालक
१ से ५ जून २०१९	वापी	९८२५१४६८६३	बालिका
२ से ६ जून २०१९	जसोल	९४१४१२२१९७	बालक
२ से ६ जून २०१९	सिलीगुड़ी	९५६४४६६४०६	बालक
३ से ७ जून २०१९	भुसावल	९४२३१९२१५६	बालिका
३ से ७ जून २०१९	आसीन्द	९४१४९७९२५७	बालिका
५ से ९ जून २०१९	साउथ कोलकाता	९४३३०२२७२०	बालक
७ से ११ जून २०१९	सरदारपुरा-जोधपुर	९७८४०४७०००	बालिका
२० से २४ जुलाई २०१९	गुवाहाटी	९४३५१४४६४३	बालिका

इस संदर्भ में अधिक जानकारी के लिए मोबाइल नं. ९८१०२३९१४९ से भी संपर्क किया जा सकता है। इच्छुक शिविरार्थी यथाशीघ्र अपना पंजीयन करवा लें।

शासनगौरव मुनिश्री ताराचंदजी का अनशनपूर्वक प्रयाण

२८ अप्रेल। सरदाशहर प्रवासित शासनगौरव मुनिश्री ताराचंदजी का १६ दिनों की तिविहार संलेखना सहित २६ दिनों के तिविहार तथा १२ दिनों के चौविहार में अनशनपूर्वक प्रयाण हो गया। उनके विषय में आचार्यप्रवर के उद्‌गार पढ़ें आगामी विज्ञप्ति में।

स्मारणा

- वर्षीतप, मासखमण, अठाई आदि तपस्याओं के संदर्भ में समाचार पत्रों में विज्ञापन न दिए जाएं।
(श्रावक संदेशिका धारा-१०६)
- तपस्या के संदर्भ में रुपयों, आभूषणों, कपड़ों, बर्तनों आदि का लेनदेन नहीं हो।
(श्रावक संदेशिका धारा-२६४)

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001
मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

•

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-9 नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला